एक जादुई सुबह

गीता धर्मराजन
चित्रांँकनः अतनु रॉय

आई लव इंडिया
कथा की 300एम थिंकबुक

एक दिन विकासपुर
गाँव का सरपंच
जिश्नू अपने खेत की ओर
जा रहा था।

तभी उसे एक अजीब-सा
पत्थर दिखा।

उसने वह पत्थर हाथ में उठा लिया।
वह सूरज की तरह चमक रहा था।

“मैं सूर्य देव हूँ,” एक धीमी आवाज़ ने पत्थर के भीतर से कहा। “बोलो तुम क्या चाहते हो?”

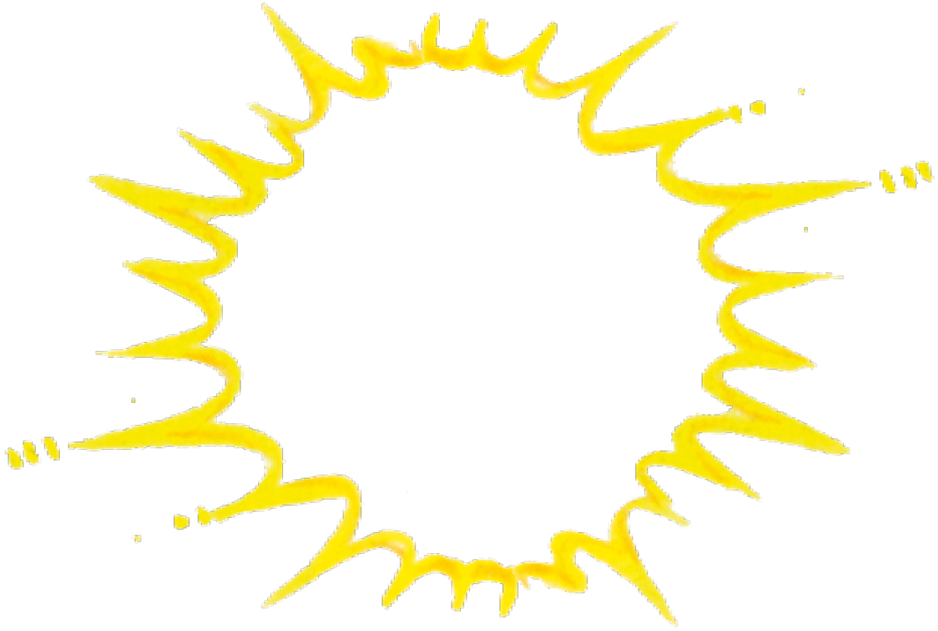

जिश्नू का कोई बेटा नहीं था।
“मुझे एक बेटा दे दो, प्रभु!”

बस इतना कहते ही जिश्नू का पेट फूलने लगा।

“मैं ? मैं...” जिश्नू गिड़गिड़ाया। “मेरा मतलब, मुझे नहीं चाहिए।”

“नहीं... तुम्हें नहीं चाहिए ?” उस आवाज़ ने पूछा।

“नहीं... मेरा मतलब... मर्द बच्चों को जन्म नहीं देते!”

सूर्य देव हँस पड़े। वे बोले, “विष्णु देवता भी तो स्त्री का रूप लेकर मोहिनी बने थे। अब तुम्हारी बारी है।”

जिश्नू के पेट से होने की खबर चारों ओर
जंगल की आग
की तरह फैल गई।

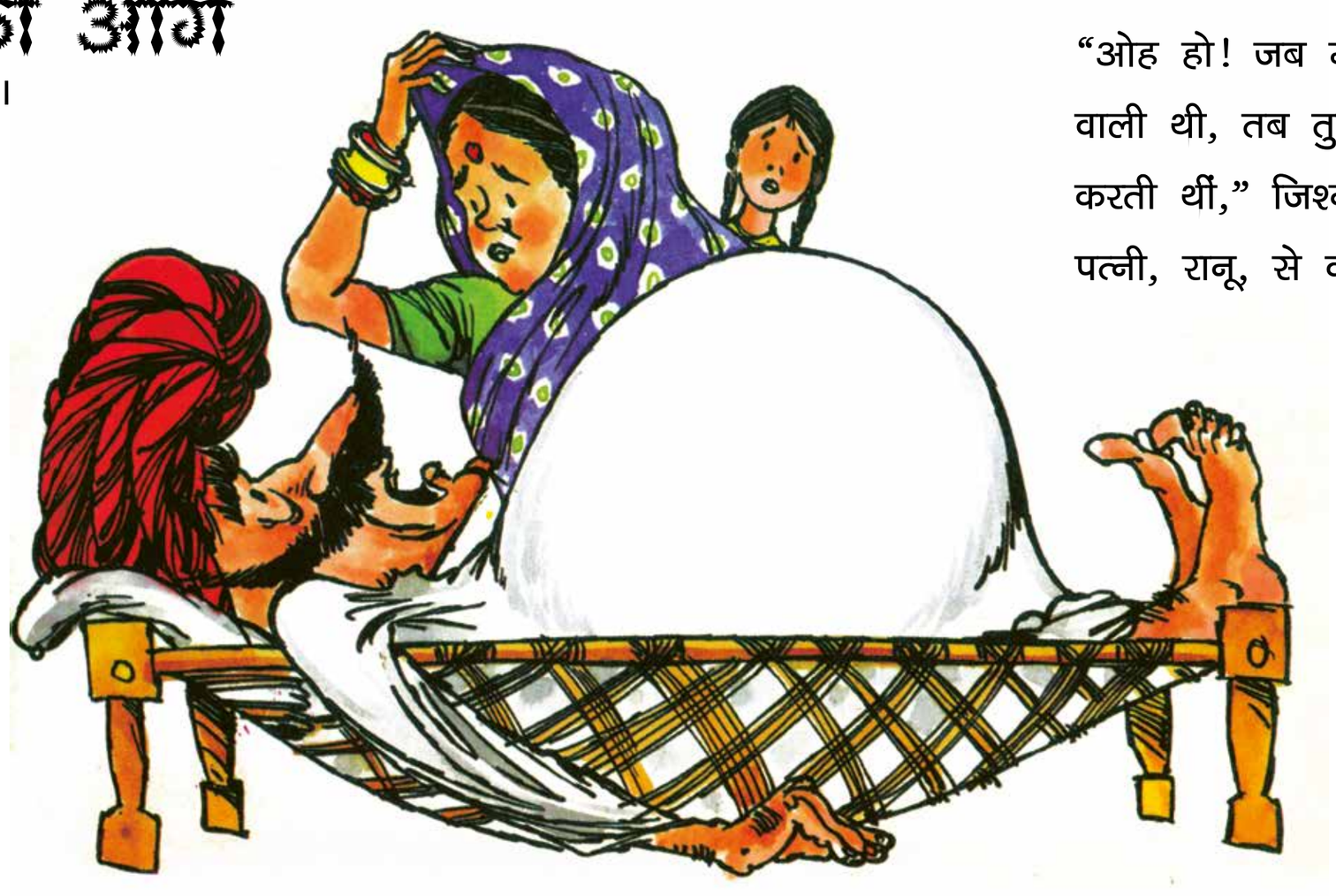

“ओह हो! जब मीतू होने वाली थी, तब तुम कैसे नखरे करती थीं,” जिश्नू ने अपनी पत्नी, रानू, से कहा।

पर जब कुछ महीने बीते
तब जिश्नू सोचने लगा कि
रानू ऐसे में इतना काम
कैसे कर लेती थी।

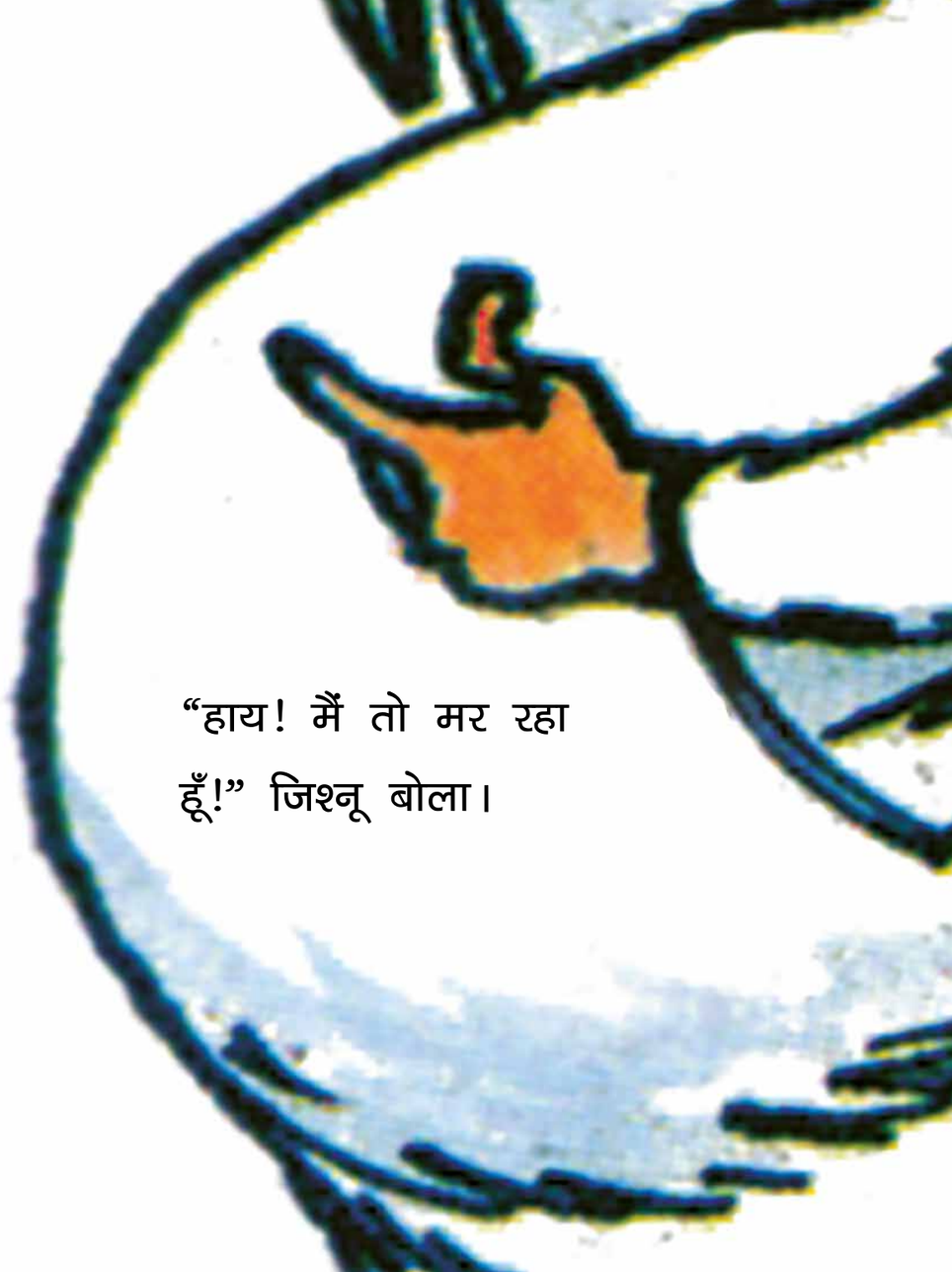

“हाय! मैं तो मर रहा
हूँ!” जिश्नू बोला।

जिश्नू ने विकासपुर गाँव की पंचायत की बैठक बुलाई। शहर से डॉक्टर साहिबा भी आयीं।

एक बुजुर्ग ने कहा, “हमारे देश में रोज़ सैकड़ों स्त्रियाँ... माने... लोग बच्चे को जन्म देते हुए मर जाते हैं। भगवान हमारे सरपंच जी की रक्षा करें।”

जिश्नू ने तब संकल्प किया कि वह नहीं मरेगा।

जैसे–जैसे जिश्नू का पेट फूलने लगा वह अपने गाँव की गर्भवती स्त्रियों की ओर ध्यान देने लगा।

जिश्नू, डॉक्टर की सलाह के मुताबिक, अच्छा भोजन करता और पूरा आराम भी करता। उसे तब एक अच्छी तरकीब सूझी।

“हम सब लोग जो बच्चों को जन्म देने वाले हैं, एक रसोई से खाएंगे। हमारे बच्चे स्वस्थ होने चाहिए!” जिश्नू बोला।

महिला मण्डल के साथ मिलकर जिश्नू ने दाई कोश बनाया। दाई के लिए चन्दा जमा करते हुए वह बोला, “विकासपुर गाँव की कोई संतान अच्छी दाई-माँ की मदद के बिना नहीं पैदा होगी।”

जिश्नू, जो पहले सूई लगवाने से डरता था, अब हिम्मत कर कई स्त्रियों के साथ टेटनेस का टीका भी लगवा आया।

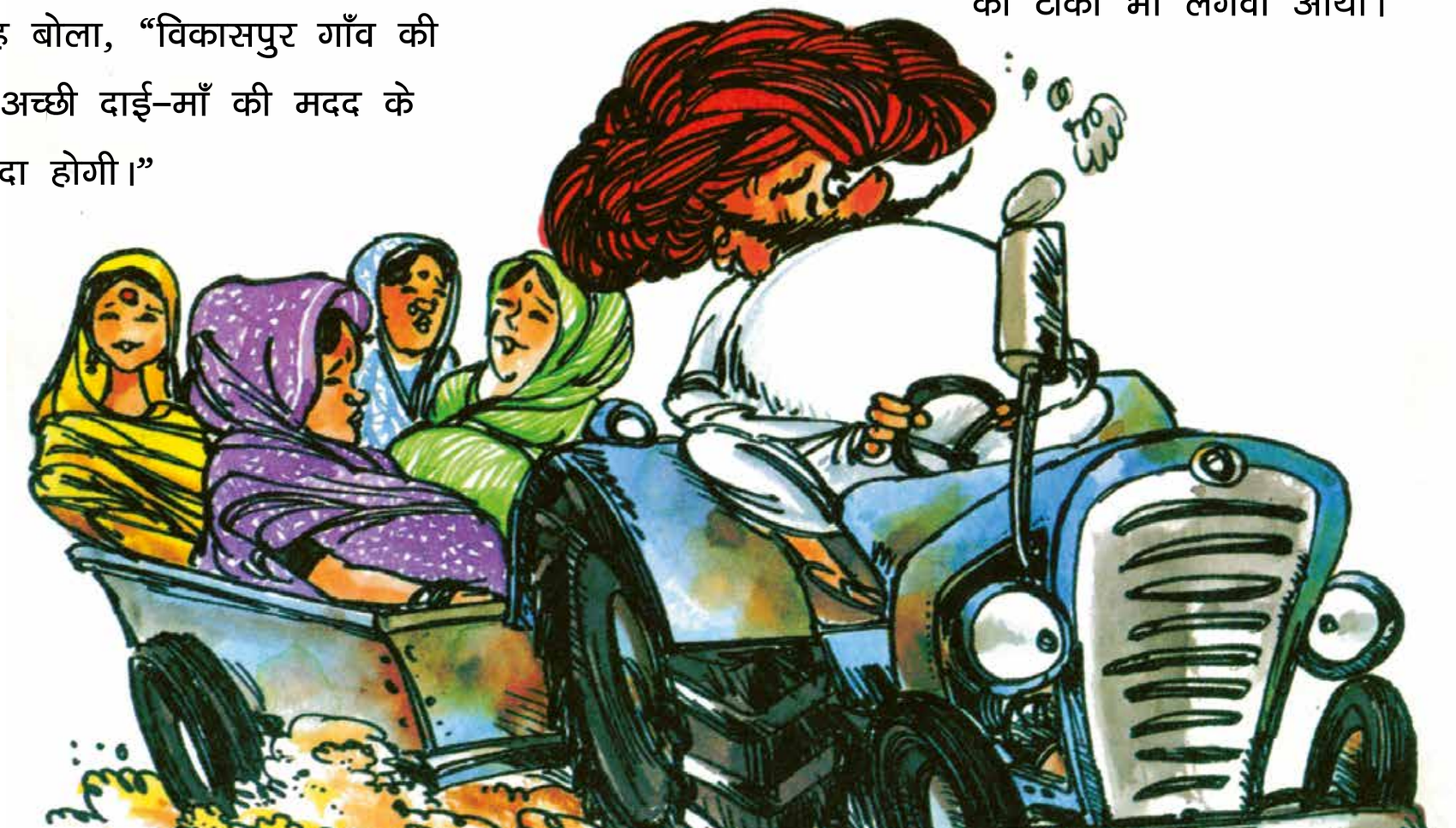

उस साल विकासपुर गाँव के
सभी बच्चे स्वस्थ पैदा हुए।

अखबारों में भी यह खबर
छपी। जिश्नू सरपंच का नाम
देशभर में प्रसिद्ध हुआ।

आखिर जिश्नू की भी बारी आई।

“ऊँ आँ ... ऊँ आँ...”

बच्चा चिल्लाया।

“मैं माँ... मेरा मतलब बापू बन गया!” जिश्नू बोला, “मेरा बेटा!”

“बेटा नहीं...” डॉक्टर बोलीं,
“बिटिया।”

जिश्नू

चौंक

गया। सूर्य देव ने उसे
धोखा दिया!

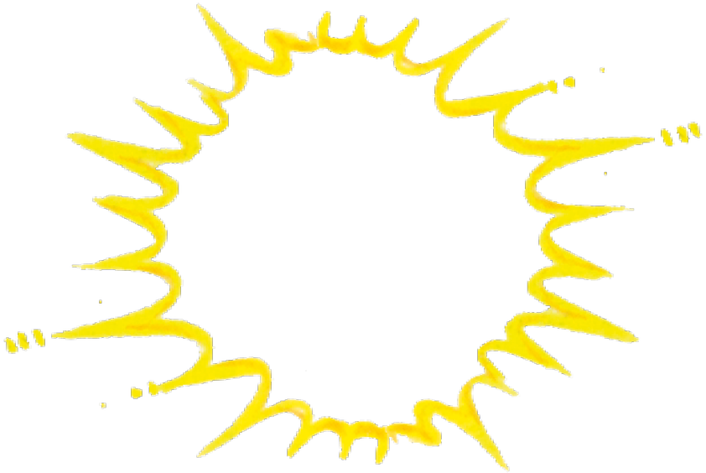

“हम उस सूर्य देव को ढूँढ
कर लाएंगे और तुम्हें बेटा
दिलवाऐंगे,” पंच बोले।

जिश्नू ने उनकी ओर देखा।
सोचा, अगर वाकई इन्हें
सूर्य देव मिल गए तो?
और अगर उसे फिर से
बच्चे को जन्म देना पड़े
तो? ना बाबा, ना!

“बेटा हो या बेटी, क्या फ़र्क है?” जिश्नू सरपंच ज़ोर से बोला। “सूर्य देव ने मुझे समझा दिया है कि लड़कों और लड़कियों में कोई अंतर नहीं है।”

जिश्नू रानू की ओर देखकर मुस्कुराया। रानू भी खुश होकर मुस्कुराने लगी।

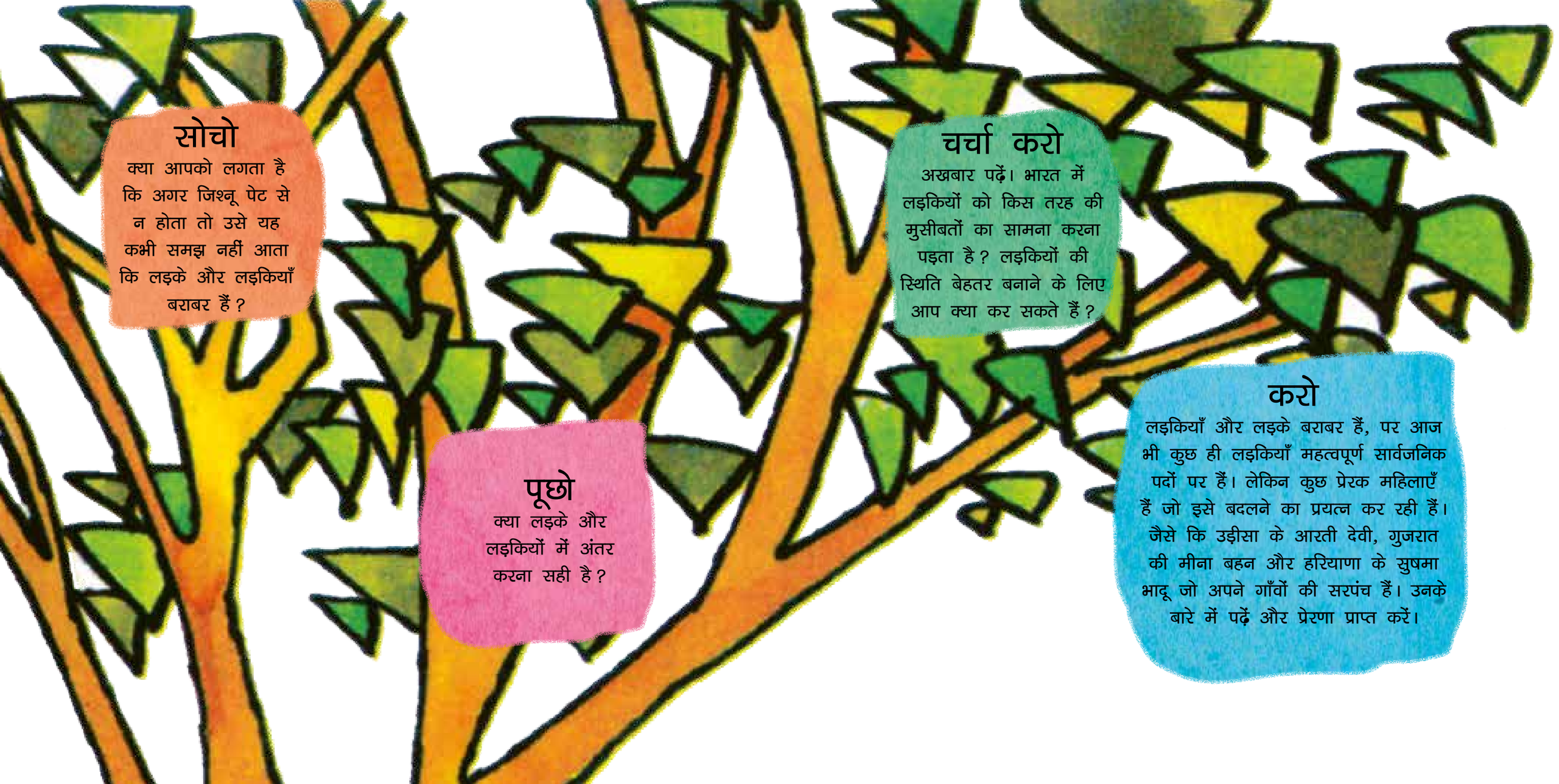

सोचो

क्या आपको लगता है कि अगर जिश्नू पेट से न होता तो उसे यह कभी समझ नहीं आता कि लड़के और लड़कियाँ बराबर हैं?

पूछो

क्या लड़के और लड़कियों में अंतर करना सही है?

चर्चा करो

अखबार पढ़ें। भारत में लड़कियों को किस तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है? लड़कियों की स्थिति बेहतर बनाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

करो

लड़कियाँ और लड़के बराबर हैं, पर आज भी कुछ ही लड़कियाँ महत्वपूर्ण सार्वजनिक पदों पर हैं। लेकिन कुछ प्रेरक महिलाएँ हैं जो इसे बदलने का प्रयत्न कर रही हैं। जैसे कि उड़ीसा के आरती देवी, गुजरात की मीना बहन और हरियाणा के सुषमा भादू जो अपने गाँवों की सरपंच हैं। उनके बारे में पढ़ें और प्रेरणा प्राप्त करें।

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

अतनु रॉय ने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। इन्होंने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्र बनाए हैं।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 2017, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंमकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

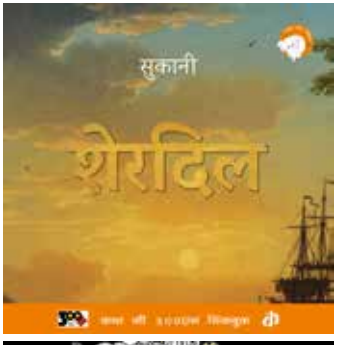

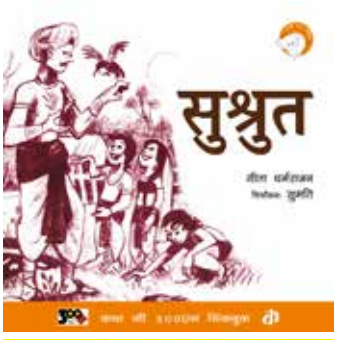

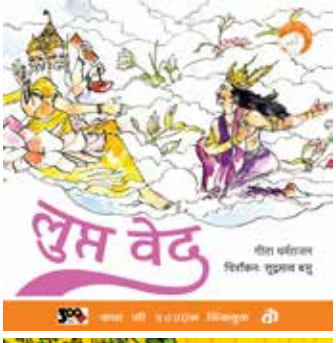

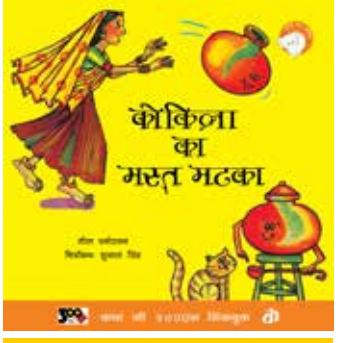

इसकी ऑरेंज श्रृंखला में

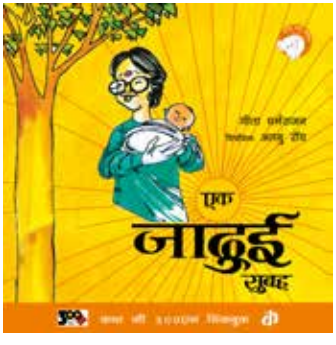

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

www.katha.org

₹ xxx